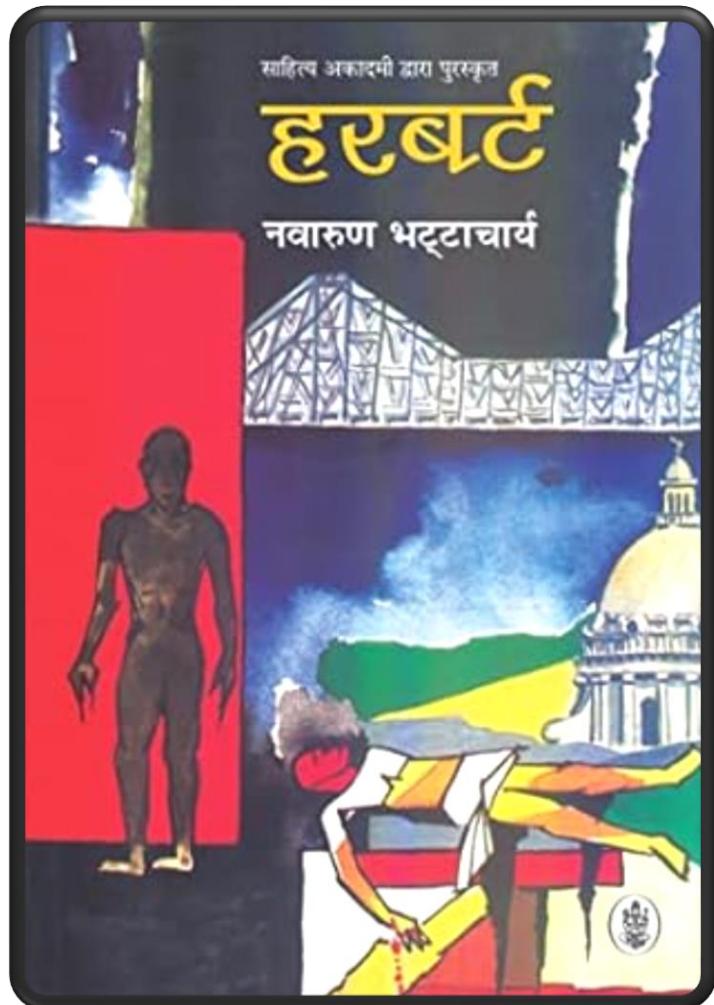


## HB3059- स्वाहा

लेखिका - महाश्वेता देवी

बांग्ला की प्रख्यात लेखिका महाश्वेता देवी का जन्म 1926 में ढाका में हुआ। उनका विशिष्ट क्षेत्र है- दलितों और साधन-हीनों के हृदयहीन शोषण का चित्रण और इसी सन्देश को वे बार-बार सही जगह पहुँचाने की कोशिश करती थी।

प्रस्तुत उपन्यास एक ऐसा पारिवारिक उपन्यास है जिसमें महाश्वेता देवी ने स्वाहा राय जैसी सम्पन्न और अहंकारी स्त्री के पेचीदा चरित्र को बड़ी कुशलता और मनोवैज्ञानिक ढंग से व्यक्त किया है। उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता पात्रों का सूक्ष्म अन्वेषण तो है ही, उनका आत्ममन्थन भी है। स्वाहा राय जैसी सामन्ती मानसिकता की स्त्री की आत्ममुग्धता और गर्ल, अन्ततः सर्वस्व नष्ट कर देता है। उपन्यास बेहद दिलचस्प है और स्थितियाँ तथा घटनाएँ पाठक को निरन्तर बाँधे रखती हैं।

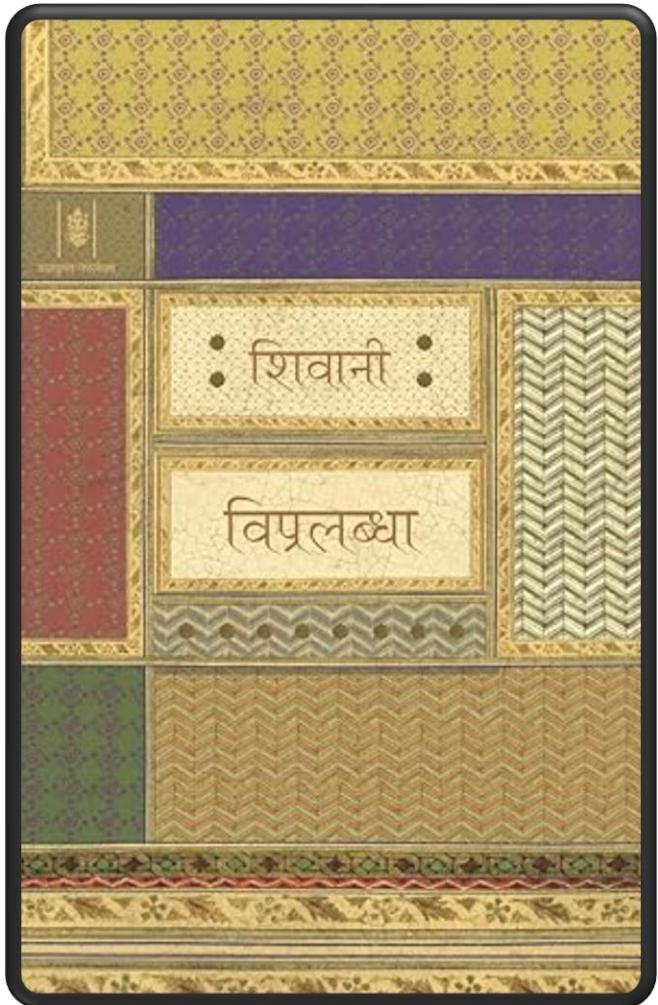


## HB3059 - हरबट

लेखक - नवारुण भट्टाचार्य

बिलकुल नई भाषा-भंगिमा और अद्भुत कथा-सामर्थ्य को उपस्थित करता यह उपन्यास अपने आप में इस बात का सबूत है कि कैसे आकार में बड़ी न होकर भी एक कथा अपने समय और जीवन का विशद आख्यान बन सकती है।

यह उपन्यास महज कथा-नायक हरबट सरकार की जीवन कथा ही नहीं है बल्कि अपने समय के इतिहास से गुजरते हुए एक ऐसे व्यक्ति की दास्तान है जिसके भीतर भी एक इतिहास है और जो अपनी मामूली जिंदगी को एक अर्थ देने के लिए अपने समय में असफल हस्तक्षेप करता है। यह उपन्यास गुजरते हुए काल का इतिहास है, बीत चुका अतीत नहीं-यह जारी है। और, हरबट भी मरता नहीं-बार-बार पैदा हो जाता है। यह कृति 'नरसिंह दास अवार्ड' और 'बैंकिम पुरस्कार' पहले ही पा चुकी थी।

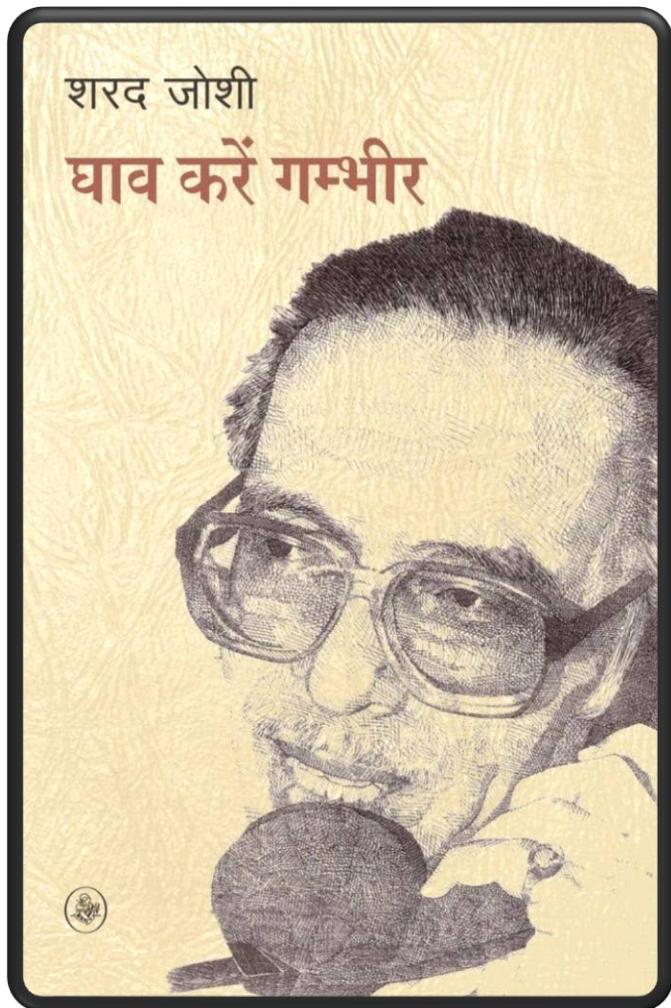


HB3059 - विप्रलब्धा

लेखिका - शिवानी

गौरा पंत 'शिवानी' का जन्म 17 अक्टूबर, 1923 को राजकोट (गुजरात) में हुआ। साहित्य और संगीत के प्रति एक गहरा रुझान 'शिवानी' को अपने पिता से ही मिला। उनके लेखन तथा व्यक्तित्व में उदारवादिता और परम्परानिष्ठता का जो अद्भुत मेल है, उसकी जड़ें इसी विविधतापूर्ण जीवन में थीं। 1927 में शिवानी को पद्मश्री से अलंकृत किया गया था।

प्रस्तुत संग्रह में दो स्मृति-चिह्न, विप्रलब्धा, शायद, ज्येष्ठा, शपथ, घंटा, 'के' एवं पुष्पहार कहानियाँ संकलित हैं। हर कथा अपनी मोहक शैली में अभिभूत कर देने की अपार क्षमता रखती है। कलात्मक कौशल के साथ रची गई ये कहानियाँ हमारी धरोहर हैं जिन्हें आज की नयी पीढ़ी अवश्य पढ़ना चाहेगी।

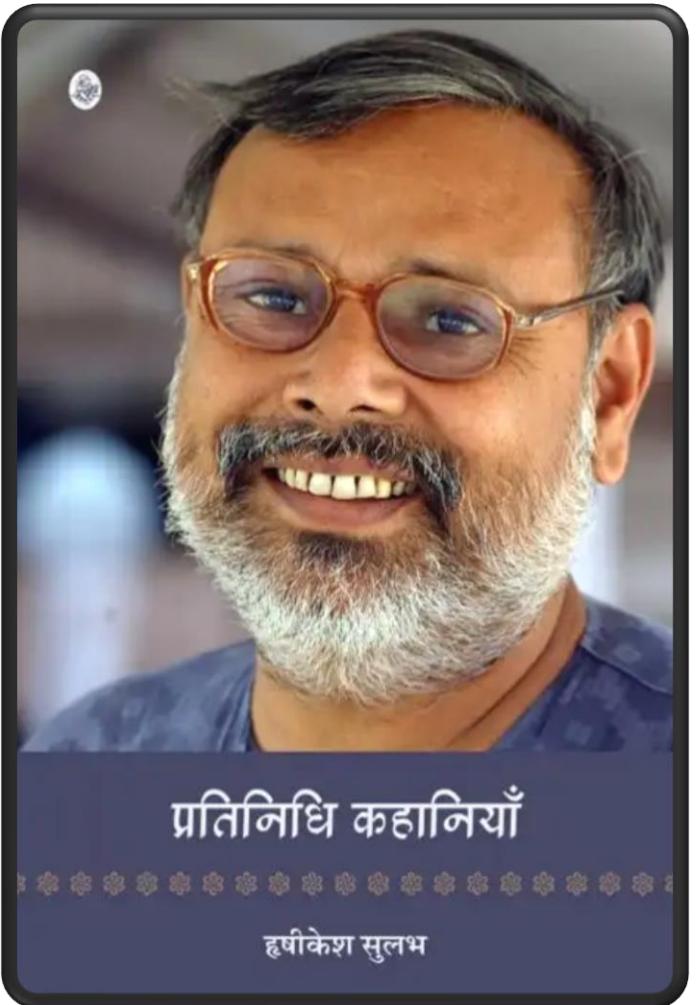


**HB3058 - घाव करें गम्भीर**

**लेखक - शरद जोशी**

शरद जोशी एक भारतीय कवि, लेखक, व्यंग्यकार और हिंदी फ़िल्मों और टेलीविजन में एक संवाद और पटकथा लेखक थे। 1990 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। शरद जोशी ने व्यंग्य लेखन की विधा को एक नया आयाम दिया और अपनी लेखनी के जरिए उस समय की सामाजिक, धार्मिक कुरीतियों और राजनीति पर चुटीला कटाक्ष किया।

घाव करें गम्भीर शरद जोशी की व्यंग्यधर्मिता का एक अद्भुत आयाम है। प्रस्तुत पुस्तक शरद जोशी द्वारा रचित व्यंग कथाओं तथा छोटे-छोटे अनुभव, लोककथाओं सरीखा स्वाद, व्यंजनाओं का समारोह और शिल्प की नवीनता की रेखांकित करने वाली रचना का संग्रह है। जिस के माध्यम से उन्होंने समाज में हास्य रस फेलने की कोशिश की है।



## HB3020 - प्रतिनिधि कहानियाँ

### लेखक - हृषीकेश सुलभ

कथाकार, नाटककार, रंग-समीक्षक हृषीकेश सुलभ का जन्म 15 फरवरी सन् 1955 को बिहार के सीवान जनपद के लहेजी नामक गाँव में हुआ। आरम्भिक शिक्षा गाँव में हुई और अपने गाँव के रंगमंच से ही आपने रंगसंस्कार ग्रहण किया। विगत तीन दशकों से कथा-लेखन, नाट्य-लेखन, रंगकर्म के साथ-साथ हृषीकेश सुलभ की सांस्कृतिक आन्दोलनों में सक्रिय भागीदारी रही है।

प्रस्तुत पुस्तक हृषीकेश सुलभ के द्वारा रचित उन श्रेष्ठ कहानियाँ जैसे अगिन जो लगी नी में, उदासियों का वसन्त, वसन्त के हत्यारे, भुजाएं व्यासब्रह्म, पांडे का पयान, वैद्यस्थल से छलाँग आदि कुछ का संकलन हैं।